वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

कृषि सुविधाओं का कृषि विकास पर प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]राज कुमार चौरसिया
शोधार्थी भूगोल
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर (म.प्र.)
[2]डॉ. महेश चन्द्र अहिरवार
शोध निर्देशक
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारसंक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र में कृषि सुविधाओं का कृषि विकास के प्रभावों का अध्ययन किया गया है। जिसमें पाया गया है कि विभिन्न प्रकार की कृषि सुविधाएँ कृषि विकास को प्रभावित करती हैं। आधुनिक कृषि में जिन मूलभूत सुविधाओं की आवश्यकता होती है। उनमें साख सुविधाएं, परिवहन, भण्डारण, विपणन, कृषि प्रचार एवं प्रसार प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन-, अग्निशमन एवं सुरक्षा, मृदा परीक्षण केन्द्र, आदान वितरण केन्द्र, बीज वितरण केन्द्र, उर्वरक वितरण केन्द्र, कीटनाशक वितरण केन्द्र, कृषि यंत्र वितरण केन्द्र, फसल बाजार केन्द्र इत्यादि सुविधाएँ उल्लेखनीय है। विकसित देशों में उपरोक्त सभी सुविधाएँ पायी जाती हैं। जिसमें वहाँ कृषि उन्नत अवस्था में है जबकि विकासशील देशों में इस सभी मूलभूत सुविधाओं का अभाव पाया गया है। जिससे वहाँ कृषि विकास में पिछड़ी अवस्था में पायी गई है।

कुंजीभूत शब्द

कृषि, विकास, सुविधाएँ, प्रभाव

प्रस्तावना

सुदृढ़ अब संरचना विकास का आधार होती है। उत्पादन और उसका स्तर भी संबंधित आधारभूत अवसंरचना से सहसंबंधित है। अत: किसी भी क्षेत्र के चतुर्मुखी विकास एवं नवीनीकरण हेतु अवसंरचनात्मक सुविधाओं का होना नितांत आवश्यक है। कृषि का विकास मूलतः अवसंरचनात्मक सुविधाओं पर निर्भर करता है। आधुनिक कृषि का विकास तभी संभव है। जब

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

यहाँ के कृषकों की अभिरूची एवं आवश्यकता एवं उद्यम के अनुरूप कृषि सुविधाएँ उपलब्ध हों।[1] कृषि प्रधान क्षेत्रों में आधुनिक कृषि की अवसंरचनात्मक सुविधाएँ जितनी निकटता से उपलब्ध हैं कृषक उनका उतना ही अधिक उपयोग कर रहे हैं। जबकि दूरस्थ क्षेत्रों के कृषक इन सुविधाओं के उपयोग में अपेक्षाकृत पीछे रह जाते है। फलत: दूरवर्ती क्षेत्रों की कृषि आधुनिक सुविधाओं के निकटतम क्षेत्रों की अपेक्षा पिछड़ी हुई पायी जाती है।[2] कृषि अवसंरचना के अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र में मिट्टी परीक्षण केन्द्र, आदान वितरण केन्द्र, फसल बाजार केन्द्र, बैंकिंग एवं साख सुविधाएँ तथा परिवहन एवं संचार सुविधाएँ इत्यादि मुख्यत: उपलब्ध हैं। जो यहाँ की कृषि आधुनिक कृषि के रूप में स्थापित कर रही है। कृषि सुविधाओं का कृषि विकास पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन निम्न लिखित बिंदुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में कृषि सुविधाओं का कृषि पर होने वाले प्रभावों का आंकलन करना तथा साथ ही साथ कृषकों को मार्गदर्शन, कृषि समस्या, समाधान एवं सुझाव देना शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य है। जिससे कृषि आधुनिक स्वरूप प्राप्त कर सके। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको को समाहित किया गया है जिसमें सुविधाओं के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन के लिए विभिन्न शासकीय, अशासकीय कार्यालयों, प्रकाशनों एवं किताबों को आधार बनाया है।

मृदा परीक्षण केन्द्र

उच्च उत्पादन फसल विशिष्टीकरण एवं उन्नत कृषि हेतु मिट्टी परीक्षण केन्द्र आवश्यक है।[3] मिट्टी की उर्वरता एवं उसे संतुलित बनाये रखने के लिये भी मिट्टी परीक्षण महत्वपूर्ण है। भिन्न-भिन्न प्रकार की फसलों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। मिट्टी परीक्षण से प्राप्त परिणामों से ही फसल विशेष के लिये आवश्यक पोषक तत्वों का ज्ञान होता है।

आदान वितरण केन्द्र

आदान वितरण केन्द्र आधुनिक कृषि के लिये आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने का कार्य करते हैं। जिनके अन्तर्गत बीज वितरण केंद्र, उर्वरक वितरण केन्द्र, कीटनाशक वितरण केन्द्र एवं कृषि

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

यंत्र वितरण केन्द्रों को सम्मिलित किया है। इनसे जहाँ एक ओर कृषि उत्पादन को आधार मिलता है। वही दूसरी ओर इनके अभाव में कृषि क्रियाएँ प्रभावित होती हैं।

बीज वितरण केन्द्र

अध्ययन क्षेत्र में कृषि उत्पादन में अधिकाधिक वृद्धि हेतु उच्च उत्पाद बीजों का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। जिससे कृषि उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है।

उर्वरक वितरण केन्द्र

उर्वरकों को आधुनिक कृषि की आत्मा माना जाता है। उर्वरक केन्द्रों की स्थिति का प्रभाव फसल प्रतिरूप तथा कृषि उत्पादन पर पड़ता है।

कीटनाशक वितरण केन्द्र

आधुनिक कृषि में कीटनाशक दवाओं की अत्याधिक आवश्यकता होती हैं।[4] फसलों में विविध रोगों एवं कीटो की रोकथाम के लिए इनका उपयोग किया जाता है। इनके अभाव में फसलों पर प्रभाव देखा गया है।

फसल बाजार केन्द्र

कृषक अपने उत्पादों का फसल बाजार केन्द्रों के माध्यम से उचित मूल्य प्राप्त करते हैं। यदि फसल बाजार केन्द्र पास में है तो वहां पर कृषको को अधिक लाभ प्राप्ति की संभावनायें रहती हैं तथा दूरस्थ फसल बाजार केन्द्रों तक उत्पादों को पहुचाने में समय एवं धन अपव्यय होता है।

बैकिंग एवं साख सुविधाएँ

आर्थिक अवस्थापना के तत्वों में बैकिंग की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है।[5] विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियाँ बैंको द्वारा संचालित की जाती हैं। इन बैंकों द्वारा कृषक को कृषि ऋण टेक्टर, उर्वरक बीज, कूप-खनन तथा कृषि-यंत्र एवं उपकरण क्रय करने के लिये किसान क्रेडिट

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

कार्ड तथा अन्य आधारभूत कृषि साधनों हेतु सस्ते ब्याज ऋण प्रदान किये जा रहे हैं। बैंको की उदार नीति से क्षेत्रीय कृषि को एक नया आयाम मिला है।

परिवहन एवं संचार

आधुनिक कृषि परिवहन के साधनों से अधिक प्रभावित हुई है[6] अतः जो कृषि क्षेत्र परिवहन साधनों के समीप हैं, वहाँ पर कृषि उपयोग संबंधी आवश्यक सामग्री की आपूर्ति यथा समय हो जाती है। परन्तु परिवहन की दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में इन अवयवों का सही उपयोग नहीं हो पाता है। इससे आधुनिक कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

संचार साधनों का विकास

कृषि के रूपान्तरण में संचार साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका है[7] संचार माध्यमों से कृषक अपनी फसल का उचित समय पर बोने जल उपलब्ध कराने, रासायनिक उर्वरक डालने एवं कीट व्याधियों से बचाने हेतु मार्ग-दर्शन प्राप्त करते रहते हैं। साथ ही अपने उत्पादों का उचित मूल्य एवं विभिन्न मंडियों के भावों की जानकारी घर बैठे ही प्राप्त कर लेते हैं। जब संचार साधन नहीं थे, तब कृषकों को जानकारी के अभाव में फसलों का कम मूल्य प्राप्त होता था। अतः कृषकों के लिये संचार क्रांति निश्चित रूप से सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हुई है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि कृषि सुविधाओं का कृषि विकास पर प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा गया है। जिन देशों में आधारभूत मुख्य सुविधाएँ उपलब्ध नहीं है। उन देशों, क्षेत्रों, प्रदेशों, की कृषि अत्यंत पिछड़ी हुई अवस्था में है और जिन विकसित क्षेत्रों, देशों, प्रदेशों मे सभी आधारभूत कृषि सुविधाएं उपलब्ध होती हैं वहाँ कृषि एवं उत्पादन में आशातीत वृद्धि हो रही है। अतः किसी भी क्षेत्र की कृषि के चतुर्मुखी विकास एवं नवीनीकरण हेतु अवसंरचनात्मक कृषि सुविधाओं का होना नितांत आवश्यक है। आधुनिक कृषि का विकास तभी संभव है जब कृषकों की अभिरूचि एवं आवश्यकता एवं उद्यम के अनुरूप कृषि सुविधाएं उपलब्ध हों।

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

संदर्भ

1. Sharma B.L. (1988) Agriculture geography, Sahitya bhavan agra (U.P.) PP 62-63
2. Ministry of Irrigation (1961) Volume 1 Madhya Pradesh
3. सिसौदिया रामवीर सिंह (2008) आधुनिक कृषि का पर्यावरण पर प्रभाव जिला भिण्ड म.प्र.
4. तिवारी रामचन्द्र (2004) कृषि भूगोल प्रयाश पुस्तक भवन प्रयाग राज (उ.प्र.) पृ.295
5. सिंह जगदीश (1984) कृषि भूगोल गोरखपुर प्रकाशन गोरखपुर (उ.प्र.) पृ.203
6. नेगी बी.एस. केदारनाथ रामनाथ मेरठ 1994-95 पृ.212
7. कमलेश एस. आर. कृषि भूगोल वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर 1996 पृ.204

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार